

## इस मकाम पर दफ्न बीबी रुक्ख्या (अ.स.) की शहादत का खुलासा

यह पाक और मासूम बच्ची, बीबी रुक्ख्या (अ.स.), जो इस रौजे में आराम फरमा रही हैं, महज़ चार साल की थीं जब सन 61 हिजरी / 680 ईस्वी में उन्हें शहादत नसीब हुई। उनकी वक्त से पहले मौत उस दौर के ज़ालिम हुक्मरानों के हाथों हुए गैर-इंसानी सुलूक का नतीजा थी, जिन्होंने ज़ोर-ज़बरदस्ती से हुक्मत कायम कर रखी थी।

बीबी रुक्ख्या (अ.स.) रसूल-ए-खुदा हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.व.) की सीधी नस्ल से थीं। वह इमाम अल-हुसैन (अ.स.) की चार बेटियों में सबसे छोटी थीं। इमाम अल-हुसैन (अ.स.) नबी-ए-अकरम (स.अ.व.व.) के नवासे और शियाओं के मुताबिक मुसलमानों के तीसरे इमाम थे। बीबी रुक्ख्या (अ.स.) यज़ीद बिन मुआविया के दौर में ज़िंदा थीं, जो अपने अखलाकी पतन, बदचलनी, बेर्इमानी, गुनाहों भरी ज़िंदगी और ज़ुल्म-ओ-ज़बर के लिए बदनाम था। वह उन बुलंद किरदार लोगों से दुश्मनी रखता था जो उसके गुनाहों, ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी को खुलकर नकारते थे। वह ऐसे लोगों को बेरहमी से सताने और मिटा देने की कोशिश करता था।

अपनी हुक्मत के शुरूआती दिनों से ही यज़ीद जानता था कि इमाम अल-हुसैन (अ.स.) ही रसूल-ए-खुदा (स.अ.व.व.) द्वारा बताए गए हक्कदार खलीफा हैं। इसी वजह से उसका सबसे बड़ा मक़सद इमाम अल-हुसैन (अ.स.) को रास्ते से हटाना था। इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के लिए यह बिल्कुल वाजेह था कि यज़ीद एक बे-दीन, अखलाक से खाली और इलाही पैगामों का इनकार करने वाला शख्स है। इसी वजह से इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके कुछ वफ़ादार साथियों ने इज़्जत और शराफ़त के साथ यज़ीद की नाजायज़ हुक्मत को मानने से इनकार कर दिया।

मक्का में इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके साथियों को बहुत सताया गया, जिसके बाद उन्हें मजबूरन इराक के दूर दराज इलाके कर्बला की तरफ जाना पड़ा। वहीं 10 मुहर्रम, 61 हिजरी / 680 ईस्वी को, तीन दिन की सख्त घेराबंदी, भयानक हालात और तपते रेंगेस्तान में पानी से पूरी तरह महरूम रहने के बाद, इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके 72 वफ़ादार साथियों को यज़ीद की तकरीबन 30 हज़ार हथियारबंद फौज से लड़ने पर मजबूर किया गया। हालाँकि इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके साथी तादाद में बहुत कम थे, फिर भी यह जंग पूरे दिन चलती रही और आखिरकार इमाम अल-हुसैन (अ.स.) और उनके तमाम साथी शहीद हो गए। उन्होंने अपनी जानें कुर्बान करके नेकी, इसाफ़ और हक्क के अबदी उस्लों को ज़िंदा रखा और यज़ीद की असल नियत को दुनिया के सामने बेनकाब कर दिया—कि वह इस्लाम के इलाही नूर को बुझाना चाहता था। हर एक शहीद ने यज़ीद के कई सिपाहियों को जहन्नम वासिल किया।

इन शहीदों की रुहानी बुलंदी ऐसी थी कि भारत के अज़ीम रहनुमा महात्मा गांधी ने कहा: “अगर मेरे पास ऐसे लोग होते, तो मैं भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को ज़ुल्म से आज़ाद करा सकता था। मैंने ज़ुल्म के खिलाफ़ जंग करना इमाम हुसैन (अ.स.) के मदरसे से सीखा।” इसके बाद यज़ीद के सिपाहियों ने बेरहमी से शहीदों के सर काटकर उन्हें नेज़ों पर चढ़ाया और इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के साथ मौजूद औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया। इनमें बीबी जैनब (अ.स.)—इमाम अल-हुसैन (अ.स.) की बहन—और बीबी रुक्ख्या (अ.स.), उनकी चार साल की मासूम बेटी भी शामिल थीं। बेवा और यतीम बच्चियों को इराक से दमिश्क तक बेरहमी से ले जाया गया।

दमिश्क पहुँचने पर कैदी औरतों को लोहे की ज़ंजीरों में जकड़कर पैदल चलाया गया। रोने पर उन्हें कोडे मारे जाते। इसी दौरान बीबी रुक्ख्या (अ.स.) अपने वालिद को याद करके रोने लगीं। उन्हें यह कहकर चूप कराया जाता था कि उनके वालिद सफर पर गए हैं। मगर जब उन्होंने ख्वाब में अपने वालिद को देखा और ज़ोर देकर उनसे मिलने की ज़िद की, तो यज़ीद ने बेरहमी से उनके वालिद का कटा हुआ सर उनके सामने पेश कर दिया। उस भयानक म़ज़र को देखकर वह मासूम बच्ची बेहोश होकर अपने वालिद के सर से लिपट गई। उनका नन्हा दिल रुक गया और उन्होंने वहीं शहादत पाई। उन्हें यहीं इस मकाम पर दफ्न किया गया।

सन 1280 हिजरी / 1863 ईस्वी में बीबी रुक्या (अ.स.) की पुरानी कब्र फट गई और उनका पाक जिस्म जाहिर हुआ। देखा गया कि उनका जिस्म ताजा, नरम और सलामत था, जैसे अभी-अभी दफ्न किया गया हो—हालाँकि 1200 साल से ज्यादा गुजर चुके थे। इस करामात का गवाह उस वक्त दमिश्क का तुर्क गवर्नर, क़ाज़ी-उल-कुज़ात और कई बड़े लोग थे। यह वाकिआ तारीख की किताबों में दर्ज है।

दुनिया भर से, खासकर शिया मुसलमान, यहाँ ज़ियारत के लिए आते हैं, उनके ग़म में शरीक होते हैं और ज़िंदगी भर ज़ुल्म के खिलाफ लड़ने का अहंद ताज़ा करते हैं। नबी-ए-अकरम (स.अ.व.व.) और इमाम अल-हुसैन (अ.स.) के अल्लाह के नज़दीक बुलंद मकाम को जानकर, लोग बीबी रुक्या (अ.स.) को वसीला बनाकर अल्लाह से दुआ करते हैं।

अल्लाह बीबी रुक्या (अ.स.) और उनके तमाम मोहब्बत करने वाले ज़ायरीन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।

बीबी रुक्या (अ.स.) का पुराना छोटा रौज़ा तक़रीबन  $10\times10$  मीटर का था, जिसे 1985 में तामीर करके बुसअत दी गई।

जनाब सकीना/रुक्या (स:अ) का शजरा अगले पेज पर है

